486 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
सप्तम् अंक
फरवरी 2019

इस अंक में...

10 सम्पादकीय
11 राष्ट्रीय घटनाक्रम
21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
28 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
32 नवीनतम सामान्य ज्ञान
42 खेलकूद
45 रोजगार समाचार
47 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
49 व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार) 2018 : अपने व्यक्तित्व की क्षमताओं और व्यवहार कौशल का प्रदर्शन
52 सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2018 में दिए गए ऐतिहासिक फैसले

फोकस

54 (1) संयुक्त राष्ट्र संघ सम्पोषणीय विकास लक्ष्यों में भारत और उसके राज्यों की उपलब्धियाँ
56 (2) कृषि 4·0
58 (3) गुणवत्तापरक शिक्षा : किन्तु कब तक
60 (4) भारत में लैंगिक समानता : सभी महिलाओं और लड़कियों का सशक्तिकरण
62 युवा प्रतिभाएं
72 स्मरणीय तथ्य
75 विश्व परिदृश्य
81 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
84 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
87 आर्थिक लेख—नोटबंदी के परिलक्षित होते परिणाम
89 राजनीतिक लेख—भारत में केन्द्र-राज्य सम्बन्ध
108 समसामयिक संवैधानिक लेख—जम्मू-कश्मीर में लागू 'अनुच्छेद-35 ए' की संवैधानिक वैधता का समीक्षात्मक मूल्यांकन
111 सामयिक लेख— (i) भारत में वामपंथी उग्रवाद : एक समीक्षा
114 (ii) ओजोन परत का विनाश एवं अनुरक्षण
116 भौगोलिक लेख—सागरीय बायोम
118 वैज्ञानिक लेख—अदृश्य सूक्ष्मजीवों की अद्भुत दुनिया
120 संचार लेख—संचार प्रक्रिया : बहुआयामी विश्लेषण
125 कृषि लेख—पर्यावरण सुरक्षा हेतु जैविक खेती
128 प्राकृतिक संसाधन लेख—जल संकट और जल प्रबन्धन
131 टेक्नोलॉजी लेख—कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) नए आयाम
132 पर्यावरण लेख—नदी प्रदूषण : गंगा नदी के परिप्रेक्ष्य में
134 सार संग्रह
138 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान— (i) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य) परीक्षा, 2017
150 (ii) छत्तीसगढ़ राज्य पात्रता परीक्षा, 2018
154 (iii) बिहार लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2018
163 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
165 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

विविध/सामान्य

167 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18–पशुपालन, डेयरी और मत्स्य-पालन के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
170 सामान्य जानकारी—दहेज सम्बन्धित आईपीसी की धारा 498 ए का समीक्षात्मक मूल्यांकन
172 समसामयिक घटनाक्रम—योजना-आयोजना पर आधारित महत्वपूर्ण गतिविधियाँ
175 तर्कशक्ति—(i) एस.बी.आई.पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2018
178 (ii) एन.आई.सी.एल. ए.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
181 बैंक ऑफ बड़ौदा (पी.ओ.) परीक्षा, 2016
187 क्या आप जानते हैं ?
188 अपना ज्ञान बढ़ाइए
189 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—सामाजिक न्याय की कसौटी पर भारतीय लोकतंत्र
191 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—475 का परिणाम
192 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—189

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

आचरण की सभ्यता का विकास कीजिए

"व्यवहार कुशल बनना है, तो महान् और सफल लोगों के व्यवहार का अनुकरण करो."

विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से भी आचरण की सभ्यता अधिक महत्वपूर्ण एवं व्यक्तित्व का महत्व प्रदान करने वाली होती है, किन्तु वह सहज प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं है, पैतृक संस्कार, वातावरण तथा व्यक्तिगत साधना की त्रिवेणी के मध्य उसका विकास होता है. प्रसिद्ध विदेशी यात्री अलबरूनी ने एक स्थान पर लिखा है कि आचरण की सभ्यता की प्राप्ति उतना ही कठिन कार्य है, जितना एक उस्तरे से किसी पहाड़ को काटना. महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में यह महत्वपूर्ण कथन किया है कि, ''मनुष्य का आचरण ही यह बताता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन, शूर अथवा भीरू है, पवित्र है अथवा अपवित्र है.''

हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार अध्यापक पूर्णसिंह ने आचरण की सभ्यता के विकास की तुलना पर्वतराज हिमालय के निर्माण से करते हुए लिखा है कि ''बर्फ का दुपट्टा बाँधे हुए हिमालय इस समय तो अति सुन्दर, अति ऊँचा और गौरवान्वित मालूम होता है, परन्तु प्रकृति ने अगणित शताब्दियों के परिश्रम से रेत का एक-एक परमाणु समुद्र के जल में डुबो-डुबो कर और उसको अपने विचित्र हथौड़ों से सुडौल कर-करके इस हिमालय के दर्शन कराए हैं. आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊँचे कलश वाला मन्दिर है.''

आचरण की सभ्यता को सदाचार या सुसंस्कृत व्यवहार भी कहते हैं. इसका विकास केवल स्वतंत्रता के मध्य होता है, अर्थात् जब व्यक्ति स्वयं इसका विकास करने के लिए उत्सुक और प्रयत्नशील होता है. प्रसिद्ध विचारक कृष्णमूर्ति के शब्दों में, ''आचरण की सभ्यता न तो बल प्रयोग की धरती पर विकसित हो सकती है और न विवशता या पुरस्कार के माध्यम से ही यह किसी अनुकरण में ही प्रदर्शित की जा सकती है. इसको भय द्वारा भी विकसित नहीं किया जा सकता है. यह तो संवेदनशील व्यवहार के मध्य स्वभावतः झाँकती हुई दिखाई देती है. यह सद्गुण कर्मों में दिखाई देता है.'' पुस्तकों को पढ़कर तथा व्याख्यानों एवं प्रवचनों को सुनकर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है. प्रभाव सदा आचरण का पड़ता है, शब्दों का नहीं. कथनी के अनुसार जिसका आचरण है, उसके आचरण का प्रभाव श्रोताओं पर अवश्य पड़ता है, परन्तु जिसकी करनी उसकी कथनी के अनुसार नहीं है, उसके शब्द श्रोताओं के लिए रामरौला मात्र अथवा मनोरंजन की सामग्री होते हैं. इसी को लक्ष्य करके एक विद्वान् ने लिखा है कि ''साधारण उपदेश तो हर गिरजे, हर मठ और हर मस्जिद में होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव हम पर तभी पड़ता है, जब गिरजे का पादरी स्वयं ईसा होता है, मन्दिर का पुजारी स्वयं महर्षि होता है, मस्जिद का मुल्ला स्वयं पैगम्बर और रसूल होता है.'' परन्तु आचरण की सभ्यता तभी प्राप्त होती है, जब व्यक्ति उस ज्ञान को अपने व्यवहार में उतार दे, अन्यथा वह ''पर उपदेश कुशल बहुतेरे'' वाली बात चरितार्थ करता हुआ दिखाई देता है. आचार्य विनोबा भावे ने तो यहाँ तक कह दिया है कि ''जिसने ज्ञान को आचरण में उतार लिया, उसने ईश्वर को ही मूर्तिमान कर लिया.''

●●●